

सं० ओ० वि०/एफ० डी०/गुडगांव/130-85/33635.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० परिवहन आयुक्त, हरियाणा चण्डीगढ़, 2 जनरल मैनेजर हरियाणा रोडवेज गुडगांव के श्रमिक श्री सत्याबीर, पुत्र श्री कृपा राम, गांव झुण्ड सराय, पोस्ट आफिस पाटली, जिला गुडगांव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं.

इसलिये अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-धम, 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-धम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उसमें सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है।

क्या श्री सत्याबीर की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० ओ० वि०/एफ० डी०/गुडगांव/75/86/33643.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० परिवहन आयुक्त, हरियाणा चण्डीगढ़, 2 जनरल मैनेजर सेंट्रल वाडी ब्रिडिंग वर्कसाय, हरियाणा रोडवेज, गुडगांव के श्रमिक श्री तेज राम पुत्र श्री धनसिंह, मकान नं० 43, 12 बिसवा, मोहल्ला अमनपुर, गुडगांव गांव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं.

इसलिये अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-धम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-धम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उसमें सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय एवं पंचाट तीन मास में दो देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है।

क्या श्री तेज राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है।

सं० ओ० वि०/एफ० डी०/गुडगांव/72-86/33651.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० चेयरमैन मार्केट कमिटी, रिवाड़ी के श्रमिक श्रीमती शबंती देवी साफत श्री महावीर त्यागी आंगरेनाईजर, ईटक, दिल्ली रोड, गुडगांव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इसलिये अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-धम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-धम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उसमें सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है।

क्या श्रीमती शबंती देवी की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत की हकदार है?